

पैन पॉवर

हिंदी दैनिक समाचार पत्र



वर्ष - 1 अंक - 88

बुदवार, अक्टूबर 14, 2026

विशाखापट्टनम संपादक: गंट्यादा अप्पाराव

पृष्ठों. 4मूल्य. 1रु

जीवीएमसी मेयर पद की दौड़ में नया मोड़..

विशाखापत्तनम की महानगरीय राजनीति में मेयर पद को लेकर नए राजनीतिक समीकरण बनने लगे हैं। सामान्य महिला वर्ग के लिए मेयर पद आरक्षित होने के बाद राजनीतिक दल अपनी रणनीतियों में बदलाव कर रहे हैं। इसी बीच वाईएसआर कांग्रेस पार्टी से वरिष्ठ राजनीतिक नेता जीवी रामचंद्र राव की पत्नी संध्यारानी का नाम अप्रत्याशित रूप से सामने आया है। उच्च शैक्षणिक योग्यता, आठ भाषाओं में दक्षता, सामाजिक सेवा की पृष्ठभूमि और परिवार के व्यापक राजनीतिक संपर्क उनकी संभावित उम्मीदवारी के पक्ष में महत्वपूर्ण कारक माने जा रहे हैं। राजनीतिक गलियारों में चर्चा है कि वाईएसआरसीपी आलाकमान ने विशाखापत्तनम के प्रमुख स्थानीय नेताओं को संध्यारानी की उम्मीदवारी पर विचार करने के संकेत दिए हैं। विशेष रूप से मछुआरा समुदाय में जीवी रामचंद्र राव के संपर्क, अन्य सामाजिक वर्गों के साथ उनके संबंध और लंबे राजनीतिक अनुभव ने इस चर्चा को और अधिक महत्व दे दिया है। हालांकि, पार्टी आलाकमान का अंतिम फैसला क्या होगा? क्या स्थानीय नेतृत्व संध्यारानी की उम्मीदवारी का समर्थन करेगा? ये सवाल अब विशाखापत्तनम की राजनीति में दिलचस्पी का विषय बन गए हैं।

पेन पावर विशेष रिपोर्ट, अक्टूबर: विशाखापत्तनम, 13 ग्रेटर विशाखापत्तनम नगर निगम (जीवीएमसी) के मेयर पद को लेकर राजनीतिक गतिविधियां धीरे-धीरे तेज होती जा रही हैं।



आंध्र प्रदेश सरकार द्वारा मेयर पद को सामान्य महिला वर्ग के लिए आरक्षित किए जाने के बाद प्रमुख राजनीतिक दलों में नए संभावित उम्मीदवारों के नाम सामने आने लगे हैं। अब तक राजनीतिक हलकों में जिन नामों और समीकरणों की चर्चा हो रही थी, उनसे अलग वाईएसआर कांग्रेस पार्टी में एक नया नाम चर्चा का केंद्र बन गया है। यह नाम है वरिष्ठ राजनीतिक नेता जीवी रामचंद्र राव की पत्नी संध्यारानी का। राजनीतिक सूत्रों के अनुसार, वाईएसआर कांग्रेस पार्टी के भीतर मेयर पद की उम्मीदवारी को लेकर चल रही चर्चाओं के दौरान पार्टी आलाकमान ने स्थानीय प्रमुख नेताओं को संध्यारानी के नाम पर भी विचार करने का संदेश दिया है। हालांकि, इस संबंध में अभी तक कोई आधिकारिक पुष्टि नहीं हुई है। फिर भी राजनीतिक हलकों में माना जा रहा है कि उनके नाम के सामने आने के पीछे कई महत्वपूर्ण कारण हैं। उनकी शैक्षणिक योग्यता, सामाजिक सेवा में भागीदारी, परिवार की राजनीतिक पृष्ठभूमि और शहर के विभिन्न सामाजिक वर्गों के साथ संबंध उनकी संभावित उम्मीदवारी के पक्ष में महत्वपूर्ण माने जा रहे हैं। ऐसे में राजनीतिक दृष्टि से महत्वपूर्ण जीवीएमसी मेयर पद के लिए वाईएसआरसीपी आलाकमान आखिर किस उम्मीदवार बनाएगा, इस पर सभी की नजरें टिकी हुई हैं।

1. सामान्य महिला आरक्षण से विशाखापत्तनम की राजनीति में बदले समीकरण! जीवीएमसी मेयर पद को

रही चर्चाओं में संध्यारानी का नाम प्रमुखता से सामने आया है। बताया जा रहा है कि पार्टी आलाकमान ने विशाखापत्तनम के कुछ प्रभावशाली नेताओं को उनके नाम पर विचार करने के संकेत दिए हैं। हालांकि, इस संबंध में कोई आधिकारिक घोषणा नहीं हुई है, लेकिन संध्यारानी की शैक्षणिक योग्यता, सामाजिक सेवा की पृष्ठभूमि और जीवी रामचंद्र राव के राजनीतिक अनुभव को इस चर्चा का प्रमुख कारण बताया जा रहा है। विशाखापत्तनम के विभिन्न सामाजिक वर्गों, कला एवं सांस्कृतिक संगठनों तथा सेवा संस्थाओं के साथ रामचंद्र राव परिवार के संबंध राजनीतिक रूप से उपयोगी साबित हो सकते हैं, ऐसा उनके समर्थकों का मानना ​​है। हालांकि, पार्टी आलाकमान की आधिकारिक घोषणा होने तक इन घटनाक्रमों को राजनीतिक चर्चाओं के रूप में ही देखा जाना चाहिए। किसी व्यक्ति के

उम्मीदवारी के पक्ष में एक सकारात्मक पहलू माना जा रहा है।

4. बचपन से समाज सेवा के प्रति समर्पण.. पति के सामाजिक कार्यों में सक्रिय सहयोग! संध्यारानी के करीबी लोगों के अनुसार, उनके व्यक्तित्व में सामाजिक सेवा का विशेष स्थान रहा है। बताया जाता है कि बचपन से ही जरूरतमंद लोगों की सहायता करने की भावना उनमें विकसित हुई और विवाह के बाद भी उन्होंने इस सेवा भावना को जारी रखा। जीवी रामचंद्र राव द्वारा आयोजित विभिन्न सामाजिक सेवा कार्यक्रमों में संध्यारानी लगातार सहयोग और प्रोत्साहन देती रही हैं। गरीब परिवारों की सहायता, विद्यार्थियों की शिक्षा में सहयोग, कलाकारों को प्रोत्साहन तथा खेल और सांस्कृतिक गतिविधियों को समर्थन देने जैसे कार्यक्रमों में उनके परिवार की भागीदारी रही है। आमतौर पर राजनीतिक परिवारों के सदस्य विभिन्न सामाजिक और सांस्कृतिक पहलू के रूप में प्रस्तुत कर रहे हैं। हालांकि, प्रत्यक्ष राजनीति में उनकी अब तक कितनी सक्रिय भूमिका रही है, यह अलग विषय है। फिलहाल सामाजिक सेवा में उनकी भागीदारी अधि

5. कांग्रेस से टीडीपी और फिर वाईएसआरसीपी तक. जीवी रामचंद्र राव का लंबा राजनीतिक सफर!

संध्यारानी का नाम मेयर पद की दौड़ में सामने आने के पीछे जीवी रामचंद्र राव की राजनीतिक और सामाजिक क्षेत्रों से जुड़े रामचंद्र राव ने अपने राजनीतिक जीवन की शुरुआत कांग्रेस पार्टी से की थी। इसके बाद उन्होंने तेलुगु देशम पार्टी (टीडीपी) में राजनीतिक गतिविधियां जारी रखीं और वर्तमान में वाईएसआर कांग्रेस पार्टी से जुड़े हुए हैं। उनके समर्थकों के अनुसार, उन्होंने अपने राजनीतिक जीवन के विभिन्न चरणों में कई राजनीतिक और मनोनीत पदों पर जिम्मेदारियां निभाई हैं। विशेष रूप से लगभग दस वर्षों तक फिल्म सेंसर बोर्ड के सदस्य के रूप में कार्य करने का अनुभव उनके पास होने का दावा किया जाता है। इसके अलावा रेलवे और पोर्ट ट्रस्ट से संबंधित बोर्डों में भी उन्होंने जिम्मेदारियां निभाई हैं, ऐसा उनके करीबी लोगों का कहना है। विशाखापत्तनम उद्योग, व्यापार, शिक्षा और पर्यटन के प्रमुख केंद्र के रूप में विकसित हो रहा है। देश के विभिन्न क्षेत्रों से आए लोग यहां निवास करते हैं। ऐसे शहर में विभिन्न समुदायों के साथ समन्वय स्थापित करना जनप्रतिनिधियों के लिए महत्वपूर्ण गुण माना जाता है। हालांकि, केवल शैक्षणिक योग्यता और भाषाई दक्षता ही राजनीतिक सफलता सुनिश्चित नहीं कर सकती। जनसमस्याओं की समझ, निर्णय लेने की क्षमता और जनता के साथ प्रत्यक्ष संबंध भी उतने ही आवश्यक हैं। इस पृष्ठभूमि में संध्यारानी की शिक्षा को उनकी संभावित

भूमिका!

राजनीतिक गतिविधियों के साथ-साथ जीवी रामचंद्र राव सामाजिक सेवा कार्यक्रमों में भी सक्रिय भागीदारी निभाते रहे हैं, ऐसा उनके समर्थकों का कहना है। विशेष रूप से कला, खेल, शिक्षा और सांस्कृतिक क्षेत्रों को उन्होंने प्राथमिकता दी है। आर्थिक कठिनाइयों का सामना कर रहे कलाकारों की सहायता करना और बीमार कलाकारों के चिकित्सा खर्चों में सहयोग देना उनकी सामाजिक गतिविधियों का हिस्सा बताया जाता है। इसी प्रकार खेलों में प्रतिभा दिखाने वाले युवाओं को प्रोत्साहित करना और खेल प्रतियोगिताओं के आयोजन में सहयोग देना भी उनके कार्यों में शामिल रहा है। गरीब विद्यार्थियों की शिक्षा के लिए आर्थिक सहायता और फीस भुगतान में सहयोग देने जैसे कार्यों का भी उनके समर्थक उल्लेख करते हैं। आजीविका के लिए संघर्ष कर रही गरीब महिलाओं को सिलाई मशीनें उपलब्ध कराना तथा छोटे व्यवसाय शुरू करने में सहायता देना भी उनके परिवार द्वारा किए गए सामाजिक कार्यों में शामिल बताया जाता है। इसके अलावा अन्नदान कार्यक्रमों में सहयोग, मंदिरों को दान तथा विभिन्न सामाजिक और सांस्कृतिक संगठनों के कार्यक्रमों में योगदान देने जैसी गतिविधियों से स्थानीय स्तर पर उनके संपर्क बढ़े हैं। उनके करीबी लोगों के अनुसार, संध्यारानी भी इन कार्यक्रमों में भाग लेकर अपने पति का सहयोग करती रही हैं। इस प्रकार राजनीतिक पृष्ठभूमि के साथ सामाजिक सेवा में परिवार की भागीदारी भी संध्यारानी की संभावित उम्मीदवारी को लेकर चल रही चर्चाओं में महत्वपूर्ण स्थान रखती है।

7. मछुआरा समुदाय से जुड़ाव.. सामाजिक समीकरणों में नया राजनीतिक पहलू! विशाखापत्तनम की राजनीति में सामाजिक समीकरणों का विशेष महत्व रहा है। एक प्रमुख तटीय शहर होने के कारण यहां मछुआरा समुदाय की सामाजिक, आर्थिक और राजनीतिक भूमिका महत्वपूर्ण है। इसी पृष्ठभूमि में जीवी रामचंद्र राव का मछुआरा समुदाय से संबंध उनके परिवार की राजनीतिक स्थिति को लेकर हो रही चर्चाओं में एक प्रमुख विषय बन गया है। पारिवारिक सूत्रों के अनुसार, संध्यारानी ब्राह्मण समुदाय से संबंध रखती हैं, जबकि जीवी रामचंद्र राव मछुआरा समुदाय से आते हैं। बताया जाता है कि रामचंद्र राव की माता कम्मा समुदाय से संबंधित थीं। उनके करीबी लोगों का मानना ​​है कि इस पारिवारिक पृष्ठभूमि के कारण विभिन्न सामाजिक वर्गों के साथ संबंध स्थापित हुए हैं। हालांकि, इन सामाजिक संबंधों का राजनीतिक प्रभाव कितना होगा, इसका अलग से आकलन करना आवश्यक है। किसी भी उम्मीदवार की चुनावी सफलता केवल सामाजिक पृष्ठभूमि पर निर्भर नहीं करती। पार्टी की संगठनात्मक शक्ति, स्थानीय नेतृत्व का समर्थन, जनता का विश्वास और चुनाव के समय की राजनीतिक परिस्थितियां भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं। फिर भी राजनीतिक पर्यवेक्षकों का मानना ​​है कि विशाखापत्तनम के विभिन्न सामाजिक वर्गों के साथ संध्यारानी के नाम पर

सामने आया जीवी रामचंद्र राव की पत्नी संध्यारानी का नाम!

सामान्य महिला आरक्षण से बदले राजनीतिक समीकरण..

संध्यारानी के नाम पर विचार करने के लिए वाईएसआरसीपी आलाकमान का संदेश?

विचार करते समय एक कारक हो सकते हैं।

8. स्थानीय नेतृत्व का समर्थन अहम.. उम्मीदवारी पर अंतिम फैसला किसका? हालांकि संध्यारानी का नाम जीवीएमसी मेयर पद की संभावित उम्मीदवारी को लेकर चर्चा में आया है, लेकिन उनके राजनीतिक भविष्य को लेकर अभी स्पष्टता नहीं है। वाईएसआरसीपी आलाकमान की ओर से उनके नाम पर विचार करने के संकेत मिलने की खबरों के बीच स्थानीय नेतृत्व की प्रतिक्रिया महत्वपूर्ण हो गई है। विशाखापत्तनम जैसे बड़े महानगर में राजनीतिक उम्मीदवार का चयन करना आसान प्रक्रिया नहीं है। पार्टी के वरिष्ठ नेता, स्थानीय निकायों के जनप्रतिनिधि, विधानसभा क्षेत्र स्तर के नेता और संगठनात्मक पदाधिकारी उम्मीदवार चयन को प्रभावित कर सकते हैं। इसके साथ ही कई महत्वपूर्ण प्रश्न भी सामने आते हैं। संभावित उम्मीदवार की जनता के बीच कितनी पहचान है? पार्टी गतिविधियों में उनकी भागीदारी कितनी रही है? शहर की समस्याओं के बारे में उनकी समझ कितनी है? क्या उनमें नगर निगम प्रशासन का नेतृत्व करने की क्षमता है? संध्यारानी के मामले में उनकी शैक्षणिक योग्यता और सामाजिक सेवा की पृष्ठभूमि सकारात्मक पहलुओं के रूप में सामने आ रही है।



उनकी शैक्षणिक योग्यता और सामाजिक सेवा के अनुभव का उल्लेख कर रहे हैं, लेकिन यदि उन्हें जनप्रतिनिधि बनने का अवसर मिलता है तो शहर के विकास के लिए उनकी प्राथमिकताएं क्या होंगी, यह जानना भी आवश्यक है।

10. मेयर पद की दौड़ में संध्यारानी.. क्या वाईएसआरसीपी की रणनीति में शुरू होगा नया अध्याय? जीवीएमसी मेयर पद को सामान्य महिला वर्ग के लिए आरक्षित किए जाने के बाद वाईएसआर कांग्रेस पार्टी की राजनीतिक रणनीति को लेकर उत्सुकता बढ़ रही है। इसी बीच जीवी रामचंद्र राव की पत्नी संध्यारानी का नाम सामने आना विशाखापत्तनम की राजनीति में नई चर्चा का कारण बन गया है। उनके समर्थकों का मानना ​​है कि रामचंद्र राव का लंबा राजनीतिक अनुभव, मछुआरा समुदाय से उनका जुड़ाव,

विभिन्न सामाजिक वर्गों के साथ परिवार के संबंध, संध्यारानी की शैक्षणिक योग्यता और सामाजिक सेवा में भागीदारी उनकी संभावित उम्मीदवारी के पक्ष में महत्वपूर्ण कारक हो सकते हैं। विशेष रूप से आठ भाषाओं में दक्षता, चार्टर्ड अकाउंटेंसी की शैक्षणिक पृष्ठभूमि और सामाजिक सेवा कार्यक्रमों में भागीदारी जैसे पहलू उन्हें अन्य संभावित दावेदारों से अलग पहचान दिला सकते हैं। हालांकि, केवल इन कारणों से उम्मीदवारी तय नहीं हो सकती। पार्टी आलाकमान का निर्णय, स्थानीय नेतृत्व की राय, चुनावी रणनीति, संगठनात्मक समीकरण और कानूनी पात्रता जैसे सभी पहलू अंतिम निर्णय को प्रभावित करेंगे। दूसरी ओर, पार्टी में अन्य महिला नेताओं के नामों पर भी विचार किए जाने की संभावना से इनकार नहीं किया जा सकता। इसलिए संध्यारानी का नाम सामने आने से पार्टी की आंतरिक चर्चाओं को नया आयाम जरूर मिला है, लेकिन उन्हें आधिकारिक उम्मीदवार बनाया जाएगा या नहीं, यह अभी स्पष्ट नहीं है।

अब सबसे बड़ा सवाल यह है कि

क्या विशाखापत्तनम के प्रमुख नेताओं को संध्यारानी के नाम पर विचार करने के लिए आलाकमान की ओर से कथित तौर पर भेजे गए संकेत आखिरकार आधिकारिक निर्णय



में बदलेंगे? जीवी रामचंद्र राव का राजनीतिक अनुभव और परिवार के सामाजिक संपर्क संध्यारानी की उम्मीदवारी को कितना मजबूत बनाएंगे? क्या वाईएसआर कांग्रेस पार्टी का स्थानीय नेतृत्व उनके नाम पर सहमति बना पाएगा? इन सवालों के जवाब आने वाले राजनीतिक घटनाक्रमों में सामने आएंगे। कुल मिलाकर, जीवीएमसी मेयर पद को लेकर नए राजनीतिक समीकरण बनने लगे हैं। सामान्य महिला आरक्षण के बीच वाईएसआर कांग्रेस पार्टी से जीवी रामचंद्र राव की पत्नी संध्यारानी का नाम सामने आना विशाखापत्तनम की राजनीति में एक दिलचस्प घटनाक्रम बन गया है। पार्टी आलाकमान से संकेत मिलने की चर्चाएं किस हद तक वास्तविक निर्णय में बदलेंगी, यह आने वाला समय बताएगा। तब तक संध्यारानी का नाम मेयर पद की दौड़ में राजनीतिक चर्चाओं का केंद्र बना रह सकता है।

संपादकीय

जंतर-मंतर से दूर होते प्रतिरोध के टिकाने

जंतर मंतर का यह परिसर केवल 18वीं सदी के खगोलीय यंत्रों का स्मारक मात्र नहीं था, बल्कि यह आधुनिक भारत के सामाजिक और राजनीतिक आंदोलनों की सबसे बड़ी प्रयोगशाला बन चुका था। वर्ष 1993 से लेकर 2026 तक के अपने 33 वर्षों के सफर में इस छोटे से मार्ग ने अनगिनत ऐतिहासिक बदलावों की नींव रखी। लोकतंत्र की जीवंतता केवल इस बात से तय नहीं होती कि संसद के भीतर सत्तापक्ष और विपक्ष के बीच कितनी सार्थक बहस होती है, बल्कि इसकी असली कसौटी यह है कि संसद के बाहर सड़कों पर आम नागरिक की आवाज को कितनी गंभीरता और सहजता से सुना जाता है। देश की राजधानी नई दिल्ली के हृदय स्थल में स्थित जंतर मंतर पिछले 33 वर्षों से इसी लोकतांत्रिक चेली, जन आक्रोश और नागरिक उम्मीदों का सबसे बड़ा केंद्र रहा है। किंतु अब केंद्रीय गृह मंत्रालय द्वारा गठित एक उच्चस्तरीय समिति की सिफारिशों के आधार पर दिल्ली पुलिस ने एक ऐतिहासिक बदलाव करते हुए जंतर मंतर को अधिकृत प्रदर्शन स्थलों की सूची से बाहर कर दिया है। 28 अप्रैल 2022 के पुराने स्थायी आदेश में संशोधन करते हुए अब राजधानी में धरना और प्रदर्शन के लिए तीन नए स्थान निर्धारित किए गए हैं, जिनमें मध्य दिल्ली का रामलीला मैदान, उत्तरी दिल्ली का बुराड़ी मैदान और पूर्वी दिल्ली के कड़कड़झूमा स्थित व्यावसायिक केंद्र मैदान शामिल हैं। प्रशासन के इस एक निर्णय ने तीन दशकों से चली आ रही प्रतिरोध की एक पूरी परंपरा को विराम दे दिया है और साथ ही लोकतांत्रिक अधिकारों तथा प्रशासनिक व्यवस्था के बीच के द्वंद्व पर एक नई बहस छेड़ दी है। जंतर मंतर का यह परिसर केवल 18वीं सदी के खगोलीय यंत्रों का स्मारक मात्र नहीं था, बल्कि यह आधुनिक भारत के सामाजिक और राजनीतिक आंदोलनों की सबसे बड़ी प्रयोगशाला बन चुका था। वर्ष 1993 से लेकर 2026 तक के अपने 33 वर्षों के सफर में इस छोटे से मार्ग ने अनगिनत ऐतिहासिक बदलावों की नींव रखी। चाहे वर्ष 2011 का भ्रष्टाचार विरोधी लोकपाल आंदोलन हो, वर्ष 2012 में निर्भया कांड के बाद उमड़ा युवाओं का स्वतःस्फूर्त आंदोलन हो, वर्ष 2015 में पूरे सैनिकों का वन रैंक वन पेंशन आंदोलन हो या फिर वर्ष 2023 में महिला पहलवानों का लंबा संघर्ष, जंतर मंतर ने हर वर्ग की पीड़ा को राष्ट्रीय पटल पर रखने का मंच प्रदान किया। देश के सुदूर कोनों से आने वाले किसानों, मजदूरों, छात्रों, शिक्षकों और वंचित वर्गों के लिए यह स्थान एक ऐसी उम्मीद की तरह था, जहाँ खड़े होकर वे सीधे सत्ता के शीर्ष से संवाद करने का अहसास पाते थे। संसद भवन से मात्र 1 से 1.5 किलोमीटर की दूरी पर होने के कारण यहाँ उठने वाली हर आवाज की गूँज नीति निर्माताओं के कानों तक आसानी से पहुँच जाती थी। इस ऐतिहासिक स्थल से प्रदर्शनों को हटाने के पीछे प्रशासन और सुरक्षा एजेंसियों के अपने ठोस तर्क हैं। तात्कालिक कारणों पर नजर डालें तो वर्ष 2026 के जून और जुलाई माह में प्रतियोगी परीक्षाओं की शुचिता और शिक्षा सुधारों की मांग को लेकर लगभग 36 दिनों तक चला विशाल छात्र आंदोलन इस फैसले का मुख्य आधार बना। उस आंदोलन के दौरान जंतर मंतर की सीमित क्षमता के विपरीत 1 लाख से अधिक प्रदर्शनकारी जुट गए थे। जब सब भारी भीड़ ने संसद भवन की ओर कूच करने का प्रयास किया, तो सुरक्षा व्यवस्था चरमरा गई और पुलिस तथा छात्रों के बीच हुई झड़पों में 118 पुलिसकर्मियों सहित दर्जनों छात्र घायल हुए। इसके अतिरिक्त, हाल ही में मतदाता सूची के विशेष गहन संशोधन के भूरे पर राजनीतिक दलों और युवा संगठनों द्वारा फिर से जंतर मंतर पर बड़े घेराव की तैयारी की जा रही थी। नए संसद भवन और कर्तव्य पथ के आसपास अति विशिष्ट व्यक्तियों के निरंतर आवागमन और संवेदनशील मंत्रालयों की सुरक्षा को देखते हुए पुलिस का मानना है कि इतनी कम दूरी पर अनियंत्रित भीड़ का जुटना राष्ट्रीय सुरक्षा के लिए बड़ा जोखिम है। सुरक्षा के अलावा स्थानीय व्यापारियों और आम नागरिकों की दैनिक परेशानियां भी इस बदलाव का एक बड़ा कारण बनी हैं। जंतर मंतर राजधानी के सबसे बड़े व्यावसायिक केंद्र कानॉन प्लेस और जनस्थ के ठीक बगल में स्थित है। जब भी यहाँ कोई बड़ा प्रदर्शन होता था, तो एहतियात के तौर पर आसपास की मुख्य सड़कें और रेल के भूमिगत स्टेशन बंद कर दिए जाते थे। इससे न केवल घंटों लंबा यातायात जाम लगता था, बल्कि नई दिल्ली रेलवे स्टेशन और हवाई अड्डे की ओर जाने वाले हजारों यात्रियों की गाड़ियां छूट जाती थीं। स्थानीय व्यापार मंडलों ने लंबे समय से यह शिकायत की थी कि लगातार होने वाले धरनों और नाकेबंदी के कारण कनॉट प्लेस के व्यापार को करोड़ों रुपये के राजस्व का नुकसान हो रहा है। सर्वोच्च न्यायालय ने भी पूर्व में यह सुझाव दिया था कि प्रदर्शनों के लिए ऐसी खुली और बड़ी जगह तलाशी जानी चाहिए जहाँ आम जनजीवन प्रभावित न होे तथा प्रदर्शनकारियों के लिए पेयजल, शौचालय और चिकित्सा जैसे बुनियादी सुविधाएं आसानी से उपलब्ध कराई जा सकें। किंतु इस प्रशासनिक सुविधा के दूसरे पहलू पर नजर डालें तो नागरिक अधिकार संगठनों और संविधानविदों की चिंताएं अत्यंत गंभीर और विचारणीय हैं। राजधानी में सत्ता के केंद्र से जन आंदोलनों को दूर धकेलने की यह प्रवृत्ति नई नहीं है, बल्कि पिछले चार दशकों में विरोध का पता तीन बार बदला जा चुका है। वर्ष 1988 तक इंडिया गेट के पास स्थित बोट क्लब देश के सबसे बड़े प्रदर्शनों का केंद्र हुआ करता था, जहाँ से संसद और राष्ट्रपति भवन सीधे दिखाई देते थे। अक्टूबर 1988 में चौधरी महेंद्र सिंह टिकैत के नेतृत्व में जब 5 लाख किसानों ने एक सप्ताह तक बोट क्लब पर डेरा डाला, तो सरकार ने सुरक्षा और व्यवस्था का हवाला देकर वहां प्रदर्शनों पर स्थायी रोक लगा दी और वर्ष 1993 में जंतर मंतर को नया विकल्प बनाया गया। वर्ष 2017 में राष्ट्रीय हरित अधिकरण ने पर्यावरण और ध्वनि प्रदूषण के नियमों का हवाला देकर जंतर मंतर पर भी आंशिक पाबंदियां लगाईं, और अब वर्ष 2026 में इसे पूरी तरह से सूची से हटा दिया गया है। बोट क्लब से जंतर मंतर और अब जंतर मंतर से बुराड़ी तथा कड़कड़झूमा के मैदानों तक का यह सफर वास्तव में सत्ता के गलियारों से आम जनता की भौतिक और मनोवैज्ञानिक दूरी बढ़ने की कहानी है। लोकतंत्र में किसी भी शांतिपूर्ण विरोध प्रदर्शन का मूल उद्देश्य सरकार का ध्यान आकर्षित करना और राष्ट्रीय समाचार माध्यमों के जरिए अपनी बात देश के सामने रखना होता है। जंतर मंतर की भौगोलिक स्थिति उसे यह विशेष महत्व देती थी कि वहां बैठ सी लोगों का एक छोटा समूह भी राष्ट्रीय चर्चा का विषय बन जाता था। इसके विपरीत, उत्तरी दिल्ली का बुराड़ी मैदान या पूर्वी दिल्ली का कड़कड़झूमा क्षेत्र मुख्य प्रशासनिक केंद्र से 15 से 20 किलोमीटर की दूरी पर स्थित हैं। बाहरी इलाकों में प्रदर्शनों को स्थानांतरित करने से प्रशासन को भीड़ प्रबंधन में तो आसानी होगी, लेकिन इससे जन आंदोलनों की दृश्यता और प्रभावशीलता कम होने का पूरा अंदेश है। जब विरोध की आवाज सत्ता के केंद्र से बहुत दूर किसी कोने में सिफट जाती है, तो उसकी अनदेखी करना तंत्र के लिए बहुत आसान हो जाता है। भारतीय संविधान का अनुच्छेद 19(1)(क) और 19(1)(ख) देश के प्रत्येक नागरिक को अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता तथा शांतिपूर्ण और निराश्रय सम्मेलन करने का मौलिक अधिकार प्रदान करता है। सर्वोच्च न्यायालय ने भी वर्ष 2018 के मजदूर किसान शक्ति संगठन बनाम भारत सघ मामले में स्पष्ट रूप से कहा था कि कानून व्यवस्था बनाए रखने के नाम पर नागरिकों के विरोध करने के अधिकार को पूरी तरह से निष्प्रभावी या अर्धहीन नहीं बनाया जा सकता। शासन का यह दायित्व है कि वह सुरक्षा और नागरिक स्वतंत्रता के बीच एक स्वस्थ संतुलन कायम करे। यदि सुरक्षा चुनौतियों और शहरी यातायात के दबाव के कारण जंतर मंतर से प्रदर्शनों को हटाना अपरिहार्य हो था, तो सरकार और प्रशासन को यह सुनिश्चित करना होगा कि रामलीला मैदान, बुराड़ी और कड़कड़झूमा के नए स्थलों पर आने वाले नागरिकों का आवाज अनसुनी न रहे। लोकतंत्र की गरिमा इसी में है कि प्रदर्शन का मैदान भले ही बदल जा, लेकिन जनता की पीड़ा को सुनने की सत्ता की संवेदनशीलता कभी कम न हो।

आन्दोलन वही, जो सार्थक मुद्दा, दिशा एवं भरोसे से जुड़ा हो

आज सबसे गंभीर प्रश्न यह है कि जनांदोलनों की दिशा कौन तय कर रहा है? क्या आंदोलन वास्तव में जनसमस्याओं के समाधान के लिए खड़े हो रहे हैं, अथवा जनता के असंतोष को राजनीतिक प्रतिस्पर्धा का साधन बनाया जा रहा है? यह प्रश्न किसी एक दल या संगठन तक सीमित नहीं है। लोकतंत्र में असहमति उसकी कमजोरी नहीं, बल्कि उसकी जीवंतता का प्रमाण है। सरकार से सवाल पूछना, नीतियों का विरोध करना और अपने अधिकारों के लिए आवाज उठाना नागरिक स्वतंत्रता का अनिवार्य हिस्सा है। लेकिन लोकतंत्र की वास्तविक परीक्षा केवल इस बात से नहीं होती कि विरोध करने की कितनी स्वतंत्रता है, बल्कि इससे भी होती है कि उस स्वतंत्रता का उपयोग किस उद्देश्य, किस भाषा और किस पद्धति से किया जा रहा है। किसी आंदोलन का मुद्दा कितना ही महत्वपूर्ण क्यों न हो, यदि उसका नेतृत्व दिशाहीन हो जाए, भाषा उत्तेजक बन जाए और पद्धति हिंसा अथवा अराजकता की ओर बढ़ने लगे, तो उसका नैतिक आधार कमजोर पड़ने लगता है। इसलिए आज देश के सामने प्रश्न केवल आंदोलनों का नहीं, बल्कि उनके चरित्र, विश्वसनीयता और राष्ट्रीय उत्तरदायित्व का भी है। दिल्ली में हाल के विरोध प्रदर्शनों और उन पर प्रशासन की सख्ती के बाद सर्वोच्च न्यायालय के हस्तक्षेप ने एक बार फिर लोकतंत्र की सीमाओं और संभावनाओं पर बहस छेड़ दी है। एक ओर शांतिपूर्ण विरोध नागरिकों का अधिकार है, तो दूसरी ओर सार्वजनिक व्यवस्था, नागरिक सुरक्षा और

कानून का पालन सुनिश्चित करना शासन का दायित्व है। इन दोनों के बीच संतुलन ही संवैधानिक लोकतंत्र की पहचान है। न तो सरकार को कानून-व्यवस्था के नाम पर नागरिक स्वतंत्रताओं के अनावश्यक दमन की छूट दी जा सकती है और न ही अदोलनकारियों को लोकतांत्रिक अधिकारों की आड़ में सार्वजनिक जीवन को बाधित करने का असीमित अधिकार प्राप्त है। संविधान अधिकार देता है, लेकिन उन अधिकारों के साथ उत्तरदायित्व भी जोड़ता है। आज सबसे गंभीर प्रश्न यह है कि जनांदोलनों की दिशा कौन तय कर रहा है? क्या आंदोलन वास्तव में जनसमस्याओं के समाधान के लिे खड़े हो रहे हैं, अथवा जनता के असंतोष को राजनीतिक प्रतिस्पर्धा का साधन बनाया जा रहा है? यह प्रश्न किसी एक दल या संगठन तक सीमित नहीं है। सत्ता पक्ष हो या विपक्ष, सामाजिक संगठन हों या जनसमूह, सभी को अपने आचरण की कसौटी संविधान, नैतिकता और जनहित को बनाना चाहिए। लोकतंत्र में विपक्ष की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण है। वह सरकार की नीतियों पर सवाल उठाता है, कमियों को सामने लाता है और जनहित के मुद्दों को राजनीतिक विमर्श में स्थान देता है। लेकिन विपक्ष का दायित्व केवल विरोध करना नहीं, बल्कि वैकल्पिक दृष्टि प्रस्तुत करना भी है। यदि हर असहमति को सत्ता के विरुद्ध निर्णायक संघर्ष में बदलने का प्रयास किया जाए, हर प्रशासनिक निर्णय को राजनीतिक षड्यंत्र बताया जाए और प्रत्येक जनसमस्या को व्यापक अव्यवस्था का प्रतीक बना दिया जाए, तो वास्तविक मुद्दे शोर में खोने लगते हैं। इसी तरह सरकार भी यदि आलोचना को शत्रुता समझने लगे, तो

लोकतांत्रिक संवाद की संभावनाएं संकुचित हो जाती हैं। आंदोलन की साथ उसके मूल उद्देश्य एवं भरोसे से बनती है। जिस मुद्दे को लेकर लोग एकत्र होते हैं, उसकी स्पष्टता, तथ्यात्मक प्रामाणिकता और समाधान की दिशा आंदोलन की विश्वसनीयता निर्धारित करती है। जब मूल प्रश्न पीछे छूट जाता है और राजनीतिक दलों की प्रतिस्पर्धा, व्यक्तिगत महत्वाकांक्षाएं अथवा वैचारिक टकराव केंद्र में आ जाते हैं, तब आंदोलन की ऊर्जा बिखरने लगती है। जनसमर्थन जुटाना और जनविश्वास अर्जित करना दो अलग-अलग बातें हैं। भीड़ किसी क्षणिक आक्रोश का परिणाम हो सकती है, लेकिन जनविश्वास निरंतर नैतिक आचरण और रचनात्मक कार्यों से अर्जित होता है। भारत का लोकतांत्रिक इतिहास इस संदर्भ में अनेक महत्त्वपूर्ण उदाहरण प्रस्तुत करता है। वर्ष 1974 का छात्र आंदोलन और लोकनायक जयप्रकाश नारायण का नेतृत्व बताता है कि जनाक्रोश को रचनात्मक परिवर्तन की शक्ति में कैसे बदला जा सकता है। बिहार के छात्रों ने भ्रष्टाचार,



महंगाई और शासन संबंधी समस्याओं के विरुद्ध आवाज उठाई थी। जयप्रकाश नारायण ने इस असंतोष को व्यापक सामाजिक और राजनीतिक सुधारों की दिशा देने का प्रयास किया। आज के आंदोलनों को इस ऐतिहासिक अनुभव से सीखना चाहिए। किसी भी आंदोलन की सफलता केवल इस बात से नहीं मापी जानी चाहिए कि कितनी सड़कें बंद हुईं, कितने लोग एकत्र हुए या कितने दिनों तक विरोध चला। उसकी सफलता का वास्तविक पैमाना यह होना चाहिए कि उसने किस समस्या का समाधान प्रस्तुत किया, जनजीवन में क्या सकारात्मक परिवर्तन लाया और समाज में संवैधानिक चेतना को कितना मजबूत किया। वर्तमान समय में इंटरनेट मीडिया ने जनमत निर्माण की प्रक्रिया को पूरी तरह बदल दिया है। अब कोई घटना कुछ ही मिनटों में व्यापक बहस का विषय बन सकती है। यह लोकतंत्र के लिए एक महत्वपूर्ण अवसर है, क्योंकि इससे आम नागरिकों को अपनी बात रखने और प्रशासन से जवाब मांगने का मंच मिला है। लेकिन यही माध्यम

महंगाई और शासन संबंधी समस्याओं के विरुद्ध आवाज उठाई थी। जयप्रकाश नारायण ने इस असंतोष को व्यापक सामाजिक और राजनीतिक सुधारों की दिशा देने का प्रयास किया। आज के आंदोलनों को इस ऐतिहासिक अनुभव से सीखना चाहिए। किसी भी आंदोलन की सफलता केवल इस बात से नहीं मापी जानी चाहिए कि कितनी सड़कें बंद हुईं, कितने लोग एकत्र हुए या कितने दिनों तक विरोध चला। उसकी सफलता का वास्तविक पैमाना यह होना चाहिए कि उसने किस समस्या का समाधान प्रस्तुत किया, जनजीवन में क्या सकारात्मक परिवर्तन लाया और समाज में संवैधानिक चेतना को कितना मजबूत किया। वर्तमान समय में इंटरनेट मीडिया ने जनमत निर्माण की प्रक्रिया को पूरी तरह बदल दिया है। अब कोई घटना कुछ ही मिनटों में व्यापक बहस का विषय बन सकती है। यह लोकतंत्र के लिए एक महत्वपूर्ण अवसर है, क्योंकि इससे आम नागरिकों को अपनी बात रखने और प्रशासन से जवाब मांगने का मंच मिला है। लेकिन यही माध्यम

यूपी कांग्रेस में कुर्सी की लड़ाई जूते-चप्पल तक आई

यूपी की राजनीति में पद केवल नाम के आगे लगने वाला तमगा नहीं होता। उसके साथ समर्थकों की फौज, टिकट की दावेदारी, संगठन पर पकड़ और भविष्य की सियासी संभावनाएं भी जुड़ी होती हैं। ऐसे में प्रदेश अध्यक्ष की कुर्सी से उतरना किसी नेता के लिए महज जिम्मेदारी बदलना नहीं, अपने प्रभाव का हिसाब-किताब भी होता है। उत्तर प्रदेश की राजनीति में कब कौन किस पाले में चला जाए, इसकी गारंटी न दिल्ली दे सकती है, न लखनऊ का कोई सियासी पंडित। अब कांग्रेस के पूर्व प्रदेश अध्यक्ष अजय राय को लेकर भी यही सवाल उठने लगा है कि क्या वह एक बार फिर भाजपा का दामन थाम सकते हैं? सवाल उठ रहा है कि जिस नेता ने प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी को वाराणसी में बार-बार चुनौती दी, क्या वही नेता अब कांग्रेस में अपनी सियासी जमीन खिसकती देख पुराने घर की ओर लौटने का रास्ता तलाश रहे हैं? फिलहाल यह अटकल है। लेकिन प्रदेश अध्यक्ष की कुर्सी छिनने, नए नेतृत्व से तनातनी और लखनऊ कांग्रेस दफ्तर में जूते-चप्पल चलने के बाद इन चर्चाओं को हवा जरूर मिल गई है। वैसे कहावत है कि घर का भेदी लंका ढाए, लेकिन यूपी कांग्रेस का हाल देखिए, यहां लंका ढहाने के लिए विपक्ष को मशक्कत करने की जरूरत ही क्या है, जब अपने ही लोग एक-दूसरे से दो-दो हाथ करने को तैयार बैठे हों! हम आपको बता दें कि अजय राय को प्रदेश कांग्रेस अध्यक्ष पद से हटकर आराधना मिश्रा 'मोना' को जिम्मेदारी सौंप दी गई। नई व्यवस्था में इमरान मसूद को भी कार्यकारी अध्यक्ष की जिम्मेदारी मिली।



मगर संगठन में बदलाव का यह फैसला पुराने नेतृत्व और उसके समर्थकों के बीच सहज रूप से स्वीकार नहीं हुआ। अजय राय की नाराजगी की एक वजह यह भी बताई जा रही है कि उन्हें हटाने के तरीके से वह असहज थे। उन्हें लगता है कि उनका भूमिका और राजनीतिक हैसियत को नजरअंदाज किया गया। देखा जाये तो यूपी की राजनीति में पद केवल नाम के आगे लगने वाला तमगा नहीं होता। उसके साथ समर्थकों की फौज, टिकट की दावेदारी, संगठन पर पकड़ और भविष्य की सियासी संभावनाएं भी जुड़ी होती हैं। ऐसे में प्रदेश अध्यक्ष की कुर्सी से उतरना किसी नेता के लिए महज जिम्मेदारी बदलना नहीं, अपने प्रभाव का हिसाब-किताब भी होता है। यही वजह है कि अब चर्चा चल रही है कि कांग्रेस उन्हें गुजरात जैसे किसी दूसरे राज्य में संगठनात्मक जिम्मेदारी देकर मनाने की कोशिश कर सकती है। दूसरी तरफ भाजपा में वापसी की संभावना भी सियासी गलियारों में तैर रही है। उत्प्लेखनीय है कि अजय राय

आज का राशि फल

मेघ राशि: आज का दिन जीवन में मील का पत्थर साबित होगा। वकीलों के लिये आज का दिन अच्छा रहेगा, नया केस हाथ लगेगा। आज खास लोगों के बीच किसी नई गतिविधि को लेकर गंभीर चर्चा होगी, जो कि सकारात्मक रहेगी। आज किसी मामले को लेकर विचारों में भावुकता रहेगी। आज कुछ लोग जलन की भावना से आपकी आलोचना कर सकते हैं।
वृष राशि: आज आपका दिन ठीक-ठाक रहने वाला है। आज आपको किसी भी प्रकार के विवादों से दूर रहने की आवश्यकता है। आज व्यवसायिक काम समय पर बनते जाएंगे। विदेशी व्यक्तियों के परिस्थितियां आपके अनुकूल होने के आसार हैं। आज ऑफिस में सहयोगियों की कार्यकुशलता से तारगेत रासय पर पूरा हो जाएगा।
मिथुन राशि: आज आपके हर परेशानी का हल चुटकियों में निकल जायेगा। आज आप लेखन कार्यों में रुचि लेंगे आपका लेखन और अच्छा होगा। आज आपकी बातें दूसरों पर प्रभाव डालेंगी। नया प्रेम संबंध के कामों से हटकर कुछ नया सीखने में



समय बीतेगा। प्रॉपर्टी या वाहन की खरीददारी में लाभ की बेहतर स्थिति बनेगी। आध्यात्म और धार्मिक गतिविधियों में आपका रुझान बढ़ेगा।
कर्क राशि: आज आपका दिन बढ़िया रहेगा। बड़े निर्णय लेने के लिए दिन अच्छा है। किसी नयी बिजनेस डील के लिए ऑफर मिलेगा। थोड़ी सी बात पर परेशान होने के बजाय उसका हल ढूढने की कोशिश करेंगे तो आपको सलुशन मिल जायेगा। आप जीवनसाथी के साथ घर के कार्यों को पूरा करने में व्यस्त रहेंगे। मेडिकल समस्या पर पढ़ाई कर हें छात्रों के लिए दिन अच्छा है।
सिंह राशि: आज आपका दिन

आपकी एकाग्रता में कमी होगी। आज सम्मानित और प्रभावशाली लोगों के संपर्क में आने से आपको कई नए विषयों की जानकारी मिलेगी। आज घर के लिए इलेक्ट्रॉनिक वस्तु की खरीदारी संभव है। लोग आपके व्यवहार से खुश रहेंगे।
तुला राशि: आज का दिन आपके लिये अच्छे परिणाम लाने वाला होगा। आज घरवालों के साथ अच्छा समय बिताने को मिलेगा, जिससे परिवार का माहौल खुशनुमा रहेगा। आज किसी समस्या को हल करने में आपका सहयोग सकारात्मक रहेगा। आस-पड़ोस की सामाजिक गतिविधियों में आपका वचस्व रहेगा। प्रॉपर्टी से संबंधित काम हल होगा। आज नकारात्मक लोगों से दूर रहेंगे और आलस की स्थिति से बचेंगे तो आपका काम समय से पूरा हो जायेगा।
वृश्चिक राशि: आज आपका दिन अच्छा रहने वाला है। आज कार्यों को सुचारु रूप से करने के लिए ज्यादा मेहनत करनी होगी। हालांकि सही समय पर उचित धनिय लेने से आपकी काफी समस्याएं हल हो

स्थगित रखेंगे तो आने वाली किसी समस्या से बच जायेंगे। इस राशि के लोगों को रोजगार के नए अवसर मिलेंगे, जिससे उनके अंदर आत्मविश्वास बढ़ेगा। आज आपकी ऑफिशियल यात्रा संभव है।
कुंभ राशि: आज का दिन मिली-जुली प्रतिक्रिया देने वाला रहेगा। आज आपका दिन खुशनुमा बीतेगा। घर पर ही परिवारवालों के साथ धार्मिक कार्यों का आयोजन करेंगे। आज आपकी तरक्की के कई रास्ते खुलेंगे। ऑफिस के काम को थोड़ा सफलकर करने की जरूरत है, आपके काम की शिकायत कर सकता है। आज किसी से भी उलझने से आपको बचना चाहिए।
मीन राशि: आज आपको किसी अपने से अच्छे खबर मिलने के योग बने हुये है। आज व्यक्तिगत काम के समय आप घबराने की बजाय परिस्थितियों का समाधान ढूढने का प्रयास करेंगे और इसमें आप सफल भी होंगे। परिवारिक सदस्य की किसी उलटबिध से घर में उत्सव का माहौल रहेगा। मार्केटिंग की जाँच कर रहे लोगों से आज अच्छा क्लाइंट जुड़ेगा।

अनुशासन की हिफाजत नहीं हो पा रही, तो गांव-कस्बों में संगठन खड़ा करने की जिम्मेदारी कौन निभाएगा? एक ओर चुनाव सामने हैं दूसरी ओर ऐसे वक्त पर अगर पदभार ग्रहण समारोह में जुते चल रहे हैं, तो टिकट बंटवारे, जिला अध्यक्षों की नियुक्ति और चुनावी गठबंधन के वक्त यह खींचतान किस मुकाम पर पहुंचेगी इसकी कल्पना सहज ही की जा सकती है। यह आशंका निराधार नहीं है कि जैसे-जैसे 2027 का विधानसभा चुनाव नजदीक आएगा, कांग्रेस की गुटबाजी और जूतम-पैजार बढ़ सकती है। आने वाले दिनों में टिकट के दावेदार बढ़ेंगे, पदों की खींचतान तेज होगी और हर नेता अपने समर्थकों के साथ ताकत दिखाने की कोशिश करेगा। अगर कांग्रेस के केंद्रीय नेतृत्व ने अभी से अनुशासन की स्पष्ट लक्ष्मण रेखा नहीं खींची, तो चुनावी तैयारी से ज्यादा ऊर्जा आपसी हिसाब चुकता करने में खर्च हो सकती है। साथ ही इस पूरे विवाद को केवल अजय राय बनाम नए नेतृत्व की लड़ाई बताकर खत्म नहीं किया जा सकता। ममता चौधरी ने आरोप लगाया है कि उनके साथ अभद्रता हुई और उन्हें धमकाया गया। उन्होंने अजय राय पर दलित विरोधी व्यवहार का आरोप भी लगाया है। दूसरी ओर, अजय राय ने भी ममता चौधरी के खिलाफ कार्रवाई की मांग की है। मामले की गंभीरता को देखते हुए प्रदेश प्रभारी राजेंद्र पाल गौतम ने पांच सदस्यीय जांच समिति बनाई है। इसकी कमान पूर्व प्रदेश अध्यक्ष बृजलाल खाबरी को दी गई है। समिति में अभिषेक दत्त, अब्दुल हनान, रवि वर्मा और शमीना शफीक भी शामिल हैं। देखा जाये तो यहां कांग्रेस नेतृत्व के सामने दोहरी चुनौती है। एक तरफ पार्टी को नेताओं के बीच अनुशासन कायम करना है, दूसरी

तरफ महिला और दलित कार्यकर्ताओं की शिकायतों को निष्पक्षता से सुनना है। यदि किसी नेता के प्रभाव के कारण शिकायत दबती है, तो संगठन के भीतर बराबरी और समता के दावों पर सवाल उठेंगे। और यदि जांच से पहले ही किसी को दोषी ठहरा दिया जाता है, तो निष्पक्ष प्रक्रिया पर सवाल खड़े होंगे। साथ ही अजय राय की नाराजगी का एक पहलू समाजवादी पार्टी के साथ कांग्रेस के रिश्तों से भी जुड़ा बताया जा रहा है। पार्टी के भीतर ऐसी चर्चा है कि अखिलेश यादव के साथ बेहतर तालमेल बैठाने की कवायद में प्रदेश नेतृत्व बदलने का फैसला लिया गया। अजय राय के समाजवादी पार्टी के साथ रिश्ते सहज नहीं रहे, जबकि प्रमोद तिवारी और आराधना मिश्रा को गठबंधन के लिहाज से अपेक्षाकृत सुविधाजनक माना जाता है। इसके अलावा, सोमवार को दिल्ली में राहुल गांधी के आह्वान पर निकले कांग्रेस के विरोध मार्च में अजय राय की गैरमौजूदगी ने भी अटकलों को हवा दी। जब प्रभावों में संगठनात्मक बदलाव के बाद नाराजगी खुलकर सामने आ रही हो और पूर्व अध्यक्ष राष्ट्रीय कार्यक्रम से दूर रहें, तो सवाल उठना लाजिमी है कि मामला सिर्फ पद का है या राजनीतिक भविष्य का भी। हालांकि अजय राय के सामने पिंडरा विधानसभा सीट का अपना सियासी हिसाब भी है। वह वहां से अपनी दावेदारी को लेकर सक्रिय रहना चाहते हैं। ऐसे में गुजरात की जिम्मेदारी स्वीकार करना, यूपी में अपनी जमीन पर ध्यान देना या किसी दूसरे राजनीतिक विकल्प पर विचार करना, इन संभावनाओं के बीच उनकी अगली चाल पर सबकी नजर रहेगी। साथ ही यूपी कांग्रेस के सामने संकट केवल अजय राय की नाराजगी का नहीं है।

2 कारोबारी भाइयों की हत्या

मां बोली-हत्यारों का खून चाहिए:पीलीभीत में अंधाधुंध फायरिंग में 20 साल के राहगीर की भी जान गई
पीलीभीत, 13 अक्टूबर (एजेंसियां)। पीलीभीत में 2 सगे कारोबारी भाइयों समेत 3 लोगों की हत्या कर दी गई। एक व्यक्ति की हालत गंभीर है। पुलिस के मुताबिक, रामलीला कमेटी के चंदे को लेकर वारदात हुई। कारोबारी भाई दूसरे गुट के घर पहुंचे। इसी दौरान कहासुनी हो गई। दूसरे गुट के लोगों ने घर से लाठी-डंडे निकालकर दोनों भाइयों को पीटना शुरू कर दिया। इसके बाद फायरिंग कर दी। गोली लगने से दोनों भाई और उनके साथ गया रिश्तेदार घायल हो गया। रास्ते से गुजर रहे एक राहगीर को भी गोली लग गई। चारों को अस्पताल ले जाया गया, जहां इलाज के दौरान दोनों कारोबारी भाइयों और राहगीर की मौत हो गई। मृतकों की पहचान कारोबारी भाई मोहित गुप्ता (38), अंकित गुप्ता (30) और राहगीर कुणाल श्रीवास्तव (18) के रूप में हुई है। घायल रिश्तेदार की पहचान रोज गुप्ता (20) के रूप में हुई है। घटना जिला मुख्यालय से 20 किमी दूर अमरिया थाना क्षेत्र की है। वारदात के बाद कारोबारी के परिवार का रो-रोकर बुरा हाल है। कारोबारी भाइयों की मां नन्ही देवी ने रोते हुए कहा- खून के बदले खून चाहिए।

बंद कमरे में मिला 25 वर्षीय युवक का शव, एफएसएल टीम ने जुटाए साक्ष्य

मुजफ्फरपुर, 13 अक्टूबर (एजेंसियां)। मुजफ्फरपुर जिले के साहेबगंज बाजार के समीप 25 वर्षीय राजा कुमार का शव उसके कमरे में फंदे से लटका मिला। वह किराना कारोबारी बालेंद्र साह का बेटा था और पिता के साथ व्यवसाय करता था। देर रात तक कमरे का दरवाजा नहीं खुलने पर परिजनों को संदेह हुआ। सूचना पर पहुंची पुलिस ने दरवाजा तोड़कर शव बरामद किया। एफएसएल टीम ने घटनास्थल से साक्ष्य जुटाए हैं। पुलिस ने शव को पोस्टमार्टम के लिए मेडिकल कॉलेज भेजकर जांच शुरू कर दी है। मृतक की पहचान राजा कुमार (25), पिता बालेंद्र साह, निवासी सुखनन मठ के समीप, साहेबगंज नगर परिषद क्षेत्र के रूप में हुई है। राजा किराना कारोबारी का बेटा था और अपने पिता के साथ व्यवसाय में हाथ बंटता था। जानकारी के अनुसार, देर रात तक कमरे का दरवाजा नहीं खुलने पर परिजनों को संदेह हुआ। सूचना मिलने पर पुलिस मौके पर पहुंची और कमरे का दरवाजा तोड़कर अंदर देखा। वहां राजा का शव फंदे से लटका मिला।

रामपुर जेल पहुंची ईडी की टीम, आजम खान से की पूछताछ



रामपुर, 13 अक्टूबर (एजेंसियां)। समाजवादी पार्टी के वरिष्ठ नेता आजम खान से जुड़े जौहर यूनिवर्सिटी और ट्रस्ट मामले में प्रवर्तन निदेशालय (ईडी) की टीम मंगलवार सुबह रामपुर जेल पहुंची। मिली जानकारी के अनुसार, ईडी की टीम ने सुबह करीब 9 बजे जेल में प्रवेश किया, जिसके बाद आजम खान से पूछताछ शुरू की गई। इस घटनाक्रम के बाद जिले के राजनीतिक और प्रशासनिक हलकों में मामले को लेकर चर्चा तेज हो गई है। ईडी की टीम जौहर यूनिवर्सिटी और उससे जुड़े ट्रस्ट के मामले में आजम खान से सवाल-जवाब कर

'नारी के सम्मान-स्वाभिमान के लिए समर्पित है सरकार' योगी बोले- 2017 से पहले सुरक्षा पर लगा था ग्रहण



लखनऊ, 13 अक्टूबर (एजेंसियां)। शारदीय नवरात्र की तृतीया पर सीएम योगी आदित्यनाथ ने मां चंद्रघंटा के स्वरूप की आराधना की। इस अवसर पर उन्होंने नारी शक्ति के सम्मान, सुरक्षा और सशक्तीकरण को समृद्ध समाज का आधार बताया। एक्स पर पोस्ट करके सीएम ने कहा कि डबल इंजन सरकार की हर पहल महिलाओं के सम्मान, स्वाभिमान और गरिमापूर्ण जीवन के लिए समर्पित है। सीएम ने कहा कि मां चंद्रघंटा का दिव्य स्वरूप नारी शक्ति के तेज, गरिमा और अदम्य साहस का प्रतीक है। यह संदेश देता है कि महिलाओं की सुरक्षा, सम्मान और स्वाभिमान ही सशक्त एवं समृद्ध समाज की नींव है। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के मार्गदर्शन में प्रदेश सरकार सुशासन के माध्यम से नारी

अमित शाह पर टिप्पणी

राहुल गांधी के खिलाफ केस की सुनवाई पूरी, 26 को फैसला



सुलतानपुर, 13 अक्टूबर (एजेंसियां)। गृह मंत्री अमित शाह के खिलाफ अभद्र टिप्पणी के मामले में लोकसभा के नेता प्रतिपक्ष राहुल गांधी के खिलाफ दायर मुकदमे पर फाइनल सुनवाई पूरी हो गई है। अदालत ने फैसले के लिए 26 अक्टूबर की तारीख तय कर दी है। राहुल गांधी के खिलाफ यह मामला 2018 में दर्ज हुआ था। चार दिनों में करीब नौ घंटे तक

चली फाइनल बहस के बाद फैसले की तारीख नीयत की गई है। राहुल गांधी के वकील काशी प्रसाद शुक्ल ने बताया कि विशेष अदालत एमपी -एमएलए के मजिस्ट्रेट शुभम वर्मा ने मामले की सुनवाई की। मुकदमा दर्ज कराने वाले विजय मिश्रा के वकील संतोष पांडेय और राहुल गांधी के वकील ने साक्ष्य और तर्क पेश किए। कोतवाली देहात थाने के हनुमानगंज निवासी बीजेपी नेता विजय मिश्र ने राहुल गांधी के खिलाफ चार अगस्त 2018 को मानहानि का मुकदमा दायर किया था। जिले में एमपी - एमएलए कोर्ट के गठन के बाद इसकी सुनवाई में तेजी आई। विशेष कोर्ट ने राहुल गांधी को सुनवाई के लिए 27 नवंबर 2023 को मुकदमे में तलब किया था। समन मिलने पर राहुल गांधी 20 फरवरी 2024 को हाजिर हुए। इसी तारीख को उन्हें कोर्ट ने जमानत दी थी।

सता पक्ष पर राहुल ने साजिश का लगावा था आरोप

कोर्ट के आदेश पर बयान दर्ज कराने के लिए 25 जुलाई 2024 को राहुल गांधी फिर हाजिर हुए और कहा था कि राजनीतिक विद्वेष की

भावना से उनकी और कांग्रेस पार्टी की छवि धूमिल करने के लिए सत्ता पक्ष की तरफ से इस मुकदमे की साजिश रची गई। कहा कि वीडियो सीडी सत्यापित नहीं है, इसमें छेड़छाड़ की गई है। कोर्ट के सवाल पर कहा कि उन पर लगाए गए सारे आरोप गलत और बेबुनियाद हैं। गवाही पूरी होने के बाद 20 फरवरी को राहुल गांधी फिर बयान दर्ज कराने कोर्ट में हाजिर हुए। कोर्ट के सवालों पर वे अपने पूर्व के बयान पर कायम रहे।

पीएम मोदी के खिलाफ टिप्पणी पर सुप्रीम कोर्ट से राहत

वहीं, प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के खिलाफ टिप्पणी के एक मामले में मंगलवार को सुप्रीम कोर्ट से राहुल गांधी को बड़ी राहत मिल गई। कोर्ट ने उनके खिलाफ निचली अदालत में चल रहे ट्रायल पर रोक लगा दी है। मामला पीएम मोदी के लिए 'चोरों के सरदार' और 'कमांडर इन थीफ' जैसी टिप्पणियों से जुड़ा है। सुप्रीम कोर्ट ने इस मामले की सुनवाई करते हुए निचली अदालत में चल रही मानहानि के मुकदमे की कार्यवाही पर अंतरिम रोक लगा दी है।

पटना हाईकोर्ट ने क्यों कहा ऐसा ?



महिला थाने गई, जहां उसकी शिकायत दर्ज नहीं हुई। फिर 10 फरवरी 2010 को उसने मुख्य न्यायिक दंडाधिकारी (सीजेएम) की अदालत में शिकायत की। अदालत के निर्देश पर पुलिस ने केस दर्ज किया और जांच के बाद रेप की कोशिश के आरोप में चार्जशीट दाखिल की। ट्रायल कोर्ट ने आरोपी को रेप की कोशिश और घर में अनधिकृत रूप से घुसने के मामले में दोषी ठहराते हुए चार साल और छह महीने की सश्रम कैद सुनाई थी।

साले की बेवफाई में फंसा सिपाही जीजा, युवती से दुराचार की कोशिश का आरोप, केस दर्ज

आगरा, 13 अक्टूबर (एजेंसियां)। यूपी के मथुरा में युवक ने इश्क में बेवफाई की। प्यार का झॉसा देकर शरीरिक शोषण किया। युवती ने शादी का दबाव बनाया तो उसे छोड़ दिया। आरोप है कि युवक का जीजा सिपाही है। फिलहाल उसकी पोस्टिंग कानपुर है। सिपाही ने युवती को धमकाया। दुराचार का प्रयास भी किया। पोंडिता ने कोर्ट के आदेश पर सिकंदरा थाने में मुकदमा दर्ज कराया है। पुलिस ने जांच शुरू कर दी है।

सिकंदरा क्षेत्र की रहने वाली युवती ने मुकदमे में लिखाया है कि उसकी मुलाकात महावन निवासी सौरभ से हुई। सौरभ ने शादी का प्रस्ताव रखा। उससे अपने जाल में फंसाया। उससे संबंध बनाए। आरोपित ने 29 जनवरी को शादी के लिए मथुरा के एक मंदिर में बुलाया। उसकी मांग भर दी। लेकिन वह इससे संतुष्ट नहीं थी। परिवार के सामने सात फेरे लेने की मांग की। सौरभ ने साफ इनकार कर दिया। इससे युवती को यकीन हो गया कि उसके साथ छल हुआ है।

‘औकात में बात करो’: कौन है दलित महिला जिसने लगाए आरोप, कांग्रेस दफ्तर में चले थे जूते

लखनऊ, 13 अक्टूबर (एजेंसियां)। यूपी कांग्रेस के लखनऊ मुख्यालय में नई प्रदेश अध्यक्ष आराधना मिश्रा की ताजपोशी के अवसर पर हुए बवाल के केंद्र में रहीं ममता चौधरी ने पूर्व अध्यक्ष अजय राय पर औकात में रहने की बात कहने का आरोप लगाया था। ममता चौधरी लगभग दो दशक से कांग्रेस से जुड़ी हुई हैं। लखनऊ के स्थानीय निकाय से राज्य महिला कांग्रेस के पद तक पहुंची हैं। दावा किया कि अजय राय के आने पर कुछ लोग महिलाओं को हटा रहे थे। इससे धक्कामुक्की हुई। वह महिला कार्यकर्ताओं को धक्का दिए जाने का विरोध कर रही थीं और जब यह बहस शुरू हुई तो वह अजय राय को कुछ भी नहीं बोल रही थीं। उन्होंने कहा कि मैं किसी को उकसा नहीं रही थी।

मैं तो उनसे बात भी नहीं कर रही थी। कहा कि उन्हें समझ नहीं आया कि यह तीखी बहस इतनी क्यों बढ़ गई। कहा कि अगर मैंने कुछ गलत कहा होता तो आप एक वरिष्ठ नेता हैं, आप मुझे फटकार लगा सकते थे। लेकिन हम पर जूते और चप्पल फेंकवाने की क्या जरूरत थी? इस घटना को दलितों और महिलाओं पर हमला कर देते हुए ममता ने कहा कि उन्हें उम्मीद है कि पार्टी का शीर्ष नेतृत्व जिम्मेदार लोगों के खिलाफ कार्रवाई करेगा। उन्होंने कहा कि मुझे कांग्रेस पर पूरा भरोसा है। यहां

27 लाख कैश, 4 हथियार और शराब की बोतलें... मोतिहारी में कुख्यात भू-माफिया के घर रेड में और क्या मिला ?



27 लाख रुपये नकद, 2 राइफल, 2 पिस्तौल, करीब 100 कारतूस और शराब की 6 ब्रांडेड बोतलें बरामद की हैं। हथियारों और नकदी के अलावा, पुलिस ने मौके से जमीन की रजिस्ट्री के 65 से अधिक दस्तावेज भी जब्त किए हैं।

इन दस्तावेजों का बाजार मूल्य

मोतिहारी, 13 अक्टूबर (एजेंसियां)। बिहार के मोतिहारी जिले में पुलिस ने भू-माफियाओं के खिलाफ एक बड़ी और सख्त कार्रवाई को अंजाम दिया है। छत्तौनी थाना क्षेत्र के बरियारपुर स्थित कथित भू-माफिया राकेश शर्मा के आवास पर तीन डीएसपी के नेतृत्व में छापेमारी की गई। इस दौरान भारी मात्रा में अवैध हथियार, नकद रुपये, शराब और करोड़ों रुपये के जमीन के कागजात बरामद किए गए हैं, जबकि मौके से मुख्य आरोपी के बेटे को गिरफ्तार कर लिया गया है।

पुलिस को मिली गुप्त सूचना के आधार पर रात करीब 12 बजे 10 गाड़ियों के साथ पुलिस बल ने राकेश शर्मा के घर पर धावा बोला। लगभग चार घंटे तक चली इस गहन छापेमारी में पुलिस ने घर के चप्पे-चप्पे की तलाशी ली। इस कार्रवाई के दौरान पुलिस ने

15 करोड़ रुपये से अधिक आंका जा रहा है। पुलिस अब इन सभी जमीन के कागजात और बरामद हथियारों के लाइसेंस की सत्यता व वैधता की गहनता से जांच कर रही है, ताकि इस अवैध कारोबार से जुड़े अन्य पहलुओं का भी खुलासा हो सके। मुख्य आरोपी राकेश शर्मा लंबे समय से जमीन के अवैध कारोबार, फर्जी रजिस्ट्री, जमीन पर कब्जा करने और लोगों को धमकाने के मामलों में सक्रिय रहा है।

छापेमारी के दौरान वह फरार मिला। हालांकि, पुलिस ने उसके बेटे साहिल शर्मा को मौके से गिरफ्तार कर लिया है और उससे पूछताछ जारी है। इस कार्रवाई से जिले के अन्य भू-माफियाओं में हड़कंप मच गया है और पुलिस फरार मुख्य आरोपी की तलाश में लगातार छापेमारी कर रही है।

32 करोड़ की मॉर्फिन बरामद; दो तस्कर गिरफ्तार; ड्रग्स तस्करी का नया अड्डा बन रहा लखनऊ!

लखनऊ, 13 अक्टूबर (एजेंसियां)। राजधानी लखनऊ में दुबग्गा के हरदोई रोड स्थित महिपत मऊ गांव में एंटी नारकोटिक्स टास्क फोर्स (एएनटीएफ) और पुलिस की संयुक्त टीम ने छापेमारी की। इस दौरान टीम को करीब 32 करोड़ रुपये की अवैध मॉर्फिन बरामद हुई। पुलिस ने मौके से बाराबंकी निवासी दो युवकों को गिरफ्तार किया है। एसीपी वीनू सिंह के अनुसार, एएनटीएफ लखनऊ यूनिट और दुबग्गा पुलिस की संयुक्त टीम ने देर रात करीब 11 बजे महिपत मऊ गांव में कार्रवाई की। इस दौरान बाराबंकी के कुर्सी थाना क्षेत्र स्थित मोहसंद टिकैतगंज गांव निवासी जुहैल (25) और उसके साथी अमजद (22) को गिरफ्तार किया गया है। पुलिस के मुताबिक, आरोपियों के कब्जे से 6.400 किलोग्राम अवैध मॉर्फिन बरामद हुई। इसकी अंतरराष्ट्रीय बाजार में कीमत करीब 32 करोड़ आंकी गई। इसके अलावा एक पिस्तल, पांच जिंदा कारतूस और एक मिस कारतूस भी बरामद हुईं। दो आईफोन और चार कोपैड मोबाइल फोन भी मिले हैं।

भाजपा प्रदेश मंत्री के हाथ-पैर बांधे, मुंह पर टेप चिपकाया कानपुर में बदमाशों ने फॉर्म हाउस के बाथरूम में बंधक बनाया

कानपुर, 13 अक्टूबर (एजेंसियां)। कानपुर में बीजेपी पिछड़ा मोर्चा के प्रदेश मंत्री रमेश यादव के हाथ पैर बांध कर 12 लाख रुपए की लूट हुई है। आधी रात नकाबपोश बदमाश फार्म हाउस में घुसे। रमेश के हाथ-पैर बांधकर लूटपाट की फिर बाथरूम में बंद करके फरार हो गए। वारदात शहर से 20 किलोमीटर दूर सेन पश्चिमपारा थाना क्षेत्र के न्योरी में हुई। रमेश 1 अक्टूबर को बीजेपी पिछड़ा मोर्चा के प्रदेश मंत्री बने थे। लखनऊ में पदभार ग्रहण करने के बाद रात 12:30 बजे कानपुर पहुंचे। घर से 500 मीटर दूर फार्म हाउस में अकेले रुके थे। वहां 4 गाई तैनात थे। रात 1:20 बजे पुलिस को वारदात की सूचना दी गई। एंड्रेशन पुलिस कमिश्नर डॉ। विपिन ताडा और डीसीपी दीपेन्द्रनाथ चौधरी फोर्स के साथ पहुंचे। जांच में फार्म हाउस में घुसते हुए बदमाशों का सीसीटीवी फुटेज नहीं मिला। हालांकि, भागते समय दो बदमाश कैमरे में कैद हुए हैं। दोनों वॉशबेसिन पर पैर रखकर टीन शेड के ऊपर से कूदकर भागे। दोनों ने काले रंग के कपड़े पहन रखे थे। रमेश दो बार ब्लॉक प्रमुख रह चुके हैं।

उनकी पत्नी शशि भी ब्लॉक प्रमुख रही हैं। उन्होंने 2022 में बसपा के टिकट पर बिट्टू सीट से विधानसभा चुनाव लड़ा था। भाजपा के प्रदेश मंत्री रमेश यादव ने बताया- फालोअर अभय राजपूत ने खाला खिलायी और करीब पौने 11 बजे सोने चला गया। इसके जाने के 15 मिनट बाद ही 2 बदमाश आए और मेरे सोने पर तमंचा लगा दिया। उसमें से एक के हाथ में पेट्रोल की बोतल भी थी। बदमाशों ने कहा- हम बहुत परेशान हैं और हमें 2 करोड़ रुपए चाहिए।

इस पर प्रेश मंत्री ने कहा- फोन करने दो तो रुपए मंगा देते हैं। बदमाशों ने कहा- हम जानते हैं तुम गाई बरामद को फोन करोगे। यहां जितने रुपए हैं दे दो। इसके बाद मुझे अंदर कैमरे में ले गए और वहां लॉकर में रखे 12 लाख रुपए ले गए। इसके बाद सोने की चेन और अंगूठी और रंडी की घड़ी ले गए। फिर मेरे दोनों पैर और हाथ बांध दिए। इसके बाद मुझे अंदर बाथरूम में बंद कर दिया। उन्हें पता था कि मुझे पसीना आता है तो तौलिया और पानी की बोतल दे गए। मुंह पर भी मेरे रगड़ आ गई है।

‘औकात में बात करो’: कौन है दलित महिला जिसने लगाए आरोप, कांग्रेस दफ्तर में चले थे जूते



महिलाओं की गरिमा का सम्मान किया जाता है। कुछ गलत लोग पार्टी को बदनाम कर रहे हैं। ममता ने उनके द्वारा किसी भी तरह की टिप्पणी किए जाने से इनकार किया है। ममता ने कहा कि मैंने कोई भी टिप्पणी नहीं की। अगर किसी और ने कुछ कहा हो तो मुझे पता नहीं। मैं तो तब हताश रह गई थी, जब अजय राय ने मुझे अपनी हद में रहने को कहा था। ममता ने कहा कि अजय राय के साथ मौजूद लोगों का बर्ताव बेहद खराब था। उन्होंने महिलाओं को धकियाया, गाली दी और पीटा भी। हम इस मसले को राहुल गांधी तक ले जाएंगे। अजय राय और उनके लोगों को दलितों से दिक्कत है। पूर्व में भी उनके व्यवहार में ऐसा दिखा है। ममता चौधरी ने 2006 में अपने राजनीतिक जीवन की शुरुआत की थी। उन्होंने मालवीय नगर वार्ड से लखनऊ नगर निगम का चुनाव लड़ा था। चौधरी ने बताया कि

वह उन्नाव के एक पुराने कांग्रेसी परिवार से ताल्लुक रखती हैं, जबकि लखनऊ उनका ससुराल है। उन्होंने बहरीन के इंडियन स्कूल से पढ़ाई की है और डीएवी पीजी कॉलेज से डिग्री हासिल की है। पिछली कार्यकारिणी में वह महिला इकाई के मध्य जोन की अध्यक्ष थी।

फिलहाल कार्यकारिणी भंग है। रविवार को यूपी कांग्रेस की नवनि्युक्त अध्यक्ष आराधना मिश्रा के पदभार ग्रहण के दिन उनके आने से ठीक पहले पार्टी के राज्य मुख्यालय में कांग्रेसियों में जूते-चप्पल चले थे। पार्टी के निवर्तमान अध्यक्ष अजय राय पर हुई टिप्पणी के बाद उनके समर्थकों और दूसरे पक्ष के बीच गाली-गलौज और धक्का-मुक्की तक स्थिति पहुंच गई थी। अजय राय कार्यक्रम में कुछ वक्त पहले ही पहुंच गए थे। आराधना मिश्रा व अन्य पदाधिकारियों का इंतजार करने के लिए वह प्रदेश अध्यक्ष के कमरे की तरफ जा रहे थे। इसी बीच पार्टी की महिला इकाई के मध्य जोन की निवर्तमान अध्यक्ष ममता चौधरी और उनके समर्थकों की तरफ से अजय राय पर आपत्तिजनक टिप्पणी की गई। इस पर अजय राय ने पलटकर जवाब दिया। आरोप है कि अजय राय ने ममता से औकात में रहने की बात की है।

'फोर्स 3' के सेट पर बाल-बाल बचे ‘दृश्यम’ फेम अभिनेता कमलेश सावंत, बताया जॉन और हर्षवर्धन ने कैसे बचाई जान



‘दृश्यम’ में इंस्पेक्टर गायतोंडे का किरदार निभाने वाले कमलेश सावंत अब जॉन अब्राहम की फिल्म ‘फोर्स 3’ में नजर आएंगे। कमलेश ने फिल्म के सेट पर हुए एक हादसे का खुलासा किया। एक्शन सीन के दौरान लोहे का ढांचा उनके ऊपर गिरने वाला था। तभी जॉन अब्राहम और हर्षवर्धन राणे ने उन्हें संभाल लिया। कमलेश ने जॉन के व्यवहार और उनके साथ काम करने के अनुभव भी साझा किए।

जॉन अब्राहम पर क्या बोले कमलेश

कमलेश सावंत ने बताया कि जॉन अब्राहम दूसरे कलाकारों के सामने भी उनके काम का जिक्र करते थे। वह कहते हैं, ‘जॉन अब्राहम सर बहुत प्यारे ईशान हैं। वह रोहित शेट्टी की फिल्म ‘मारिया’ कर रहे हैं। इस फिल्म में मेरे साथ ‘लक्ष्म’ में काम कर चुके कुछ मराठी कलाकार हैं। उनसे जॉन मजाक में कहते हैं कि मैं कमलेश के लिए ‘फोर्स 3’ कर रहा हूँ। उनकी ये बातें सुनकर मुझे

बहुत अच्छा लगा।’ कमलेश आगे कहते हैं, ‘वह मेरे मुंह पर बोलते हैं कि मैं तेरे लिए यह कर रहा हूँ। बाकी किसके लिए कर रहा हूँ। वह जो कहते हैं, वह दिखता भी है। इतना प्यारा इंसान मैंने कभी नहीं देखा। जॉन अपने साथ काम करने वाले लोगों को बहुत सम्मान देते हैं।’

‘फोर्स 3’ के सेट पर हुई खतनाक घटना

कमलेश ने फिल्म के सेट पर हुए हादसे के बारे में बताया, ‘एक सीन में गोलीबारी हो रही थी। मैं लोहे के ढांचे पर था। जब मैं नीचे आया, तो वह ढांचा गिर गया। मुझे लगा कि आज तो कुछ हो गया। लेकिन 10-15 सेकंड बाद एहसास हुआ कि मुझे कुछ नहीं हुआ। मैंने इधर देखा तो जॉन अब्राहम सर ने मुझे पकड़ा हुआ था और दूसरी तरफ हर्षवर्धन राणे ने। दोनों ने मुझे पकड़ा हुआ था।’ वह आगे बताते हैं, ‘वह लोहे का ढांचा था। उसका एक हिस्सा मेरे सिर पर गिरने वाला था। उन लोगों ने उसे पकड़ लिया। उस वक्त मैं बहुत डर गया था। असल में लोहे का ढांचा मेरे सिर पर आने वाला था।’

कमलेश सावंत ने बताया कि ‘फोर्स 3’ का एक गाना शूट होना बाकी है। उनके मुताबिक, इसकी शूटिंग नवंबर में हो सकती है। फिल्म की रिलीज को लेकर उन्होंने कहा कि यह अगले साल जनवरी में आ सकती है।

नीब करौरी बाबा के बाद अब देवराहा बाबा की कहानी बड़े पर्दे पर, बनी फिल्म ‘मचान बाबा’

भारतीय आध्यात्मिक परंपरा और संतों के जीवन से जुड़ी कहानियाँ इन दिनों सिनेमा में नई जगह बना रही हैं। नीब करौरी बाबा से प्रेरित फिल्म ‘हनुमान अंश’ की सफलता के बाद अब देश के सबसे रहस्यमयी संतों में गिने जाने वाले देवराहा बाबा की कहानी बड़े पर्दे पर आने जा रही है। फिल्म का नाम ‘मचान बाबा’ है। मेकर्स ने इसका टाइटल पोस्टर जारी कर दिया है। फिल्म फिलहाल रिसर्च और प्री-प्रोडक्शन के दौर में है और इसे 2027 में रिलीज करने की तैयारी है।

वर्षों रहस्य बना रहा देवराहा बाबा का जीवन?

देवराहा बाबा की पहचान उनके मचान से जुड़ी थी। वह नदी किनारे जमीन से कई फीट ऊपर बने मचान पर रहते और वहीं से श्रद्धालुओं से मिलते थे। लेकिन उनकी ज़िंदगी का सबसे बड़ा रहस्य उनकी उम्र को लेकर रहा।बाबा कितने वर्ष जीवित रहे, इसे लेकर अलग-अलग दावे और जनश्रुतियाँ मौजूद हैं। लेखक अभिजीत सेन ने भी अपनी पुस्तक में देवराहा बाबा की असाधारण दीर्घायु से जुड़े विभिन्न विवरणों और स्मृतियों को पड़ताल की है। कुछ कथाओं में उनकी आयु 500 वर्ष से भी अधिक होने तक के दावे किए गए हैं, हालाँकि इसका कोई सर्वमान्य ऐतिहासिक प्रमाण उपलब्ध नहीं है।



जॉर्ज पंचम से इंदिरा-राजीव गांधी तक के प्रसंग

देवराहा बाबा के बारे में सबसे दिलचस्प बात यह भी है कि उनके साथ अलग-अलग दौर की कई बड़ी राजनीतिक हस्तियों के प्रसंग जुड़े हैं। ब्रिटिश सम्राट जॉर्ज पंचम की 1911 में बाबा से मुलाकात का दावा पुराने विवरणों में मिलता है। 2009 में संसद में हुई चर्चा के दौरान भी इस प्रसंग का उल्लेख किया गया था।

पूर्व प्रधानमंत्री इंदिरा गांधी की देवराहा बाबा से मुलाकात और उनके आशीर्वाद से जुड़ी कहानी भी काफी चर्चित रही है। इसी तरह 1989 में राम मंदिर शिलान्यास से पहले तत्कालीन प्रधानमंत्री राजीव गांधी की बाबा से हुई मुलाकात का उल्लेख विभिन्न संस्मरणों में मिलता है। फिल्म में इन ऐतिहासिक और राजनीतिक प्रसंगों को किस रूप में

दिखाया जाएगा, मेकर्स ने फिलहाल इसका खुलासा नहीं किया है।

नीब करौरी बाबा से भी था संबंध

‘मचान बाबा’ और ‘हनुमान अंश’ के बीच एक दिलचस्प कड़ी भी सामने आती है। नीब करौरी बाबा और देवराहा बाबा लगभग एक ही दौर में सक्रिय रहे थे। फिल्म के लिए की जा रही रिसर्च में सामने आए भक्त-संस्मरणों और मौखिक विवरणों में दोनों संतों की मुलाकातों का जिक्र मिलता है। इन विवरणों के मुताबिक नीब करौरी बाबा, देवराहा बाबा का काफी सम्मान करते थे।

ब्रिटेन और अमेरिका से जुड़े निर्माता

‘मचान बाबा’ को ब्रिटेन में स्थापित भारतीय मूल की कारोबारी पूनम गुप्ता OBE और अमेरिका में रहने वाले उद्यमी विकल्प पालीवाल प्रोड्यूस कर रहे हैं। ब्रिटेन में ‘पेपर क्वीन’ के नाम से मशहूर पूनम

गुप्ता कारोबार की दुनिया में अपनी पहचान बनाने के बाद इस फिल्म के जरिए फिल्म निर्माण के क्षेत्र में जन्मे विकल्प पालीवाल वर्तमान में ऑस्टिन, टेक्सास में रहते हैं और आईटी तथा रियल एस्टेट कारोबार से जुड़े हैं।

पूनम गुप्ता कहती हैं, ‘देवराहा बाबा का जीवन आध्यात्मिकता, इतिहास और रहस्य का अनोखा संगम है। हमारी कोशिश उनकी कहानी को श्रद्धा के साथ-साथ गंभीर रिसर्च और सिनेमाई संवेदनशीलता के साथ बड़े पर्दे पर प्रस्तुत करने की है।”

दूसरे निर्माता विकल्प पालीवाल के मुताबिक, “यह पूरी तरह भारतीय कहानी है, लेकिन इसमें मौजूद विश्वास, रहस्य और मानवीय जिज्ञासा की अपील वैश्विक है।”

फिल्म ओजस फिल्मस के बैनर तले बन रही है, जो सॉफ्टवेयर और एआई कंपनी ओजस सॉफ्टेक की फिल्म एवं कंटेंट इकाई है।मेकर्स का कहना है कि ‘मचान बाबा’ केवल चमत्कारों की कहानी नहीं होगी। फिल्म देवराहा बाबा के जीवन से जुड़े आस्था, इतिहास, राजनीति और उन रहस्यों की पड़ताल करेगी, जिनकी चर्चा उनकी मृत्यु के दशकों बाद भी जारी है। ‘मचान बाबा’ को 2027 में रिलीज करने की योजना है।

स्ट्रगल की परिभाषा पर बोले विद्युत जामवाल बाहर से आए हैं तो परेशानियां तो होंगी ही



स्ट्रीट फाइटर’ से हॉलीवुड डेब्यू करने जा रहे अभिनेता विद्युत जामवाल ने ओटीटी के आने से कलाकारों की बदली ज़िंदगी और उनकी नजर में असली संघर्ष क्या है और स्टार बनने के बाद कलाकारों की जिम्मेदारी क्या होनी चाहिए।

बाहर से आने वालों पर क्या बोले एक्टर?

विद्युत के मुताबिक इंडस्ट्री में कुछ भी आसानी से नहीं मिलता। वह कहते हैं, ‘अगर लोगों को लगता है कि सीधा मिल जाता है, तो सीधा कुछ भी नहीं मिलता। इसका मतलब ये है कि अगर आपको स्विमिंग सीखनी है तो गीला होना पड़ेगा। जब मैं लोगों को सुनता हूँ कि मैंने खाना नहीं खाया था, एक्टिंग में ये किया, तीन दिन भूखा रहा, ऑडिशन दिए, तो

मुझे लगता है कि ये तो प्रोसेस है। इससे क्या होता है कि आपने खाना नहीं खाया? अगर आप बाहर से आए हैं तो थोड़ी बहुत दुविधाएं होंगी।’

स्टार बनने के बाद यह करेंगे विद्युत

स्ट्रगल को लेकर विद्युत कहते हैं, ‘लेकिन जब आप स्टार बन जाएंगे तो क्या आप उन लोगों की मदद करेंगे जो नए आए हैं? सबसे अहम सवाल यही है। क्या आप उनकी जर्नी आसान करेंगे? मैं इंटरव्यू में सुनता हूँ कि मैं तीन दिन यहाँ रहा, मैंने ये किया, लोकल ट्रेन से ट्रेवल किया। यह नॉर्मल है। ये तो बहुत नॉर्मल चीज है, जिसे लोग स्ट्रगल कहते हैं। मेरी नजर में ये रियल स्ट्रगल नहीं है।’

ओटीटी ने बदली कलाकारों की किश्मत

ओटीटी के आने से कलाकारों की बदली स्थिति का जिक्र करते हुए विद्युत कहते हैं, ‘मुझे मुंबई आए जितना समय हुआ है, मैं जितने नेशनल स्कूल और ड्रामा के एक्टर्स को जानता था, जो बेरोजगारी के आलम से गुजर रहे थे, आज वो काफी जाने-पहचाने एक्टर्स हो गए हैं। ओटीटी में जिनको मौका नहीं दिया जा रहा था, ओटीटी ने उनकी बहुत चॉंसेज दिए। हर एक्टर जिसने एक्टिंग में महारत हासिल की है या एजुकेशन ली है, उसे काम जरूर मिलना चाहिए।’

आनंद एल राय की अगली फिल्म नखरेवाली में रोमांस और कॉमेडी के साथ मिलेगा सामाजिक संदेश

‘तेरे इश्क में’ और ‘तनु वेड्स मनु रिटर्न्स’ जैसी फिल्मों का निर्देशन कर चुके बॉलीवुड के जाने-माने निर्देशक आनंद एल राय की नई फिल्म ‘नखरेवाली’ की रिलीज डेट का ऐलान हो गया है। खास बात यह है कि इस बार फिल्म को राहुल शंकल्या ने डायरेक्ट किया है। वहीं, जियो स्टूडियोज, आनंद एल. राय और हिमांशु शर्मा फिल्म के निर्माता हैं। जबकि इसकी कहानी दिव्य निधि शर्मा ने लिखी है। बता दें कि मेकर्स ने ‘नखरेवाली’ का ऐलान साल 2024 में किया था और 2025 के वलैंटाइन डे पर इसे रिलीज करने वाले थे, लेकिन ऐसा नहीं हो सका।

इस फिल्म के जरिए मेकर्स नए कलाकार अंश दुग्गल और प्रगति श्रीवास्तव को लॉन्च करने वाले थे। हालांकि, रिलीज के हुई देरी के चलते अंश को इससे पहले आलिया भट्ट के फिल्म ‘डॉंट बी शाय’ में देखा जा चुका है। अब लगभग डेढ़ साल बाद फिर

‘नखरेवाली’ की नई रिलीज डेट सामने आ गई है। रोमांटिक कॉमेडी फिल्म ‘नखरेवाली’ 30 अक्टूबर, 2026 को सिनेमाघरों में रिलीज होने वाली है। यह फिल्म प्यार, रिश्ते और महिला-पुरुष की भूमिकाओं को एक नए अंदाज में पेश करने

का वादा करती है। फिल्म के पोस्टर पर एक टैगलाइन लिखी है, ‘कभी-कभी प्यार में मजनु को भी लैला बनना पड़ता है’, जो रिश्ते के पारंपरिक तौर-तरीकों में एक मजेदार बदलाव की तरफ इशारा करती है।

फिल्म बनाने वालों के अनुसार,



‘नखरेवाली’ हल्के-फुल्के और मनोरंजक अंदाज में महिलाओं की सुरक्षा और समाज में गहराई से जोड़े मुद्दों पर चर्चा करने की कोशिश करती है। यह फिल्म ऐसे अहम मुद्दों को एक ऐसी कहानी में पिरोती है जो दिलचस्प होने के साथ-साथ सोचने पर भी मजबूर करती है।

‘नखरेवाली’ में एक ‘वोमेंटिक कॉमेडी’ (महिलाओं पर केंद्रित रोमांटिक कॉमेडी) वाला नयापन लाती है। यह फिल्म रिश्तों और जेंडर इक्वालिटी (स्त्री-पुरुष समानता) पर आज के दौर के नजरिए के साथ ह्यूमर और इमोशन का बेहतरीन मेल है।

बता दें कि ‘नखरेवाली’ से पहले आनंद एल राय, हिमांशु शर्मा और कलर येलो प्रोडक्शन द्वारा निर्मित फिल्म ‘नई नवेली’ रिलीज होने वाली है। इसकी कहानी भी दिव्य निधि शर्मा ने लिखी है। फिल्म 16 अक्टूबर को आ रही है, जिसमें यामी गौतम लीड रोल में हैं।

बिपाशा बसु बिटिया देवी के जन्म के बाद से एक्टिंग से दूर हैं। मगर, उनके फैसले के लिए खुशखबरी है। अभिनेत्री करीब छह साल बाद अपनी एक्टिंग का जलवा बिखरने को तैयार हैं। वे हंसल मेहता की वेब सीरीज से जुड़ी हैं, जिसकी शूटिंग शुरू हो चुकी है।

सनी कौशल और विशाल जेटवा के साथ आएंगी नजर

बिपाशा बसु मशहूर फिल्ममेकर हंसल मेहता की नई सीरीज में एक अहम रोल में नजर आएंगी। अभी तक इस शो के बारे में अधिक जानकारी सामने नहीं आई है। फिलहाल, बस इतना पता चला है कि सनी कौशल और विशाल जेटवा भी इस शो में बिपाशा के साथ नजर आएंगे। सीरीज का नाम अभी तय नहीं है। क्या होगी सीरीज की कहानी? हंसल मेहता की इस अनटाइटल्ड सीरीज को कश्यप कपूर और राधव राज कक्कड़ ने लिखा है। इसे ‘ऑलमाइटी मोशन

पिक्चर्स प्रोडक्शंस’ के बैनर तले प्रभलीन संधू ने प्रोड्यूस किया है। इस प्रोजेक्ट की शूटिंग पहले ही शुरू हो चुकी है। यह शो प्राइम वीडियो पर आएगा। इसकी कहानी एक छोटे से, गुमनाम शहर की है, जो महाद्वीप की हेरोइन राजधानी बनने की कगार

पर है। इसमें सनी कौशल एक ईमानदार पुलिस वाले का किरदार निभा रहे हैं, जो अपनी ईमानदारी और ईंसानियत को बचाने की कोशिश करते हुए सिस्टम के अंदर और बाहर की ताकतवर ताकतों से लड़ते हैं।

2020 में आई थी आखिरी



दुनियाभर में 40 भाषाओं में रिलीज होगी रणबीर कपूर की फिल्म रामायण



अपकमिंग फिल्म ‘रामायण’ को रिलीज होने में बस कुछ ही दिन बचे हैं। गुजरते वक्त के साथ फिल्म को लेकर दर्शकों में उत्साह बढ़ता जा रहा है। अब मेकर्स ने कन्फर्म किया है कि रणबीर कपूर, साई पल्लवी और यश स्टारर यह फिल्म 5 नवंबर को दुनिया भर के सिनेमाघरों में रिलीज होगी। इसकी एडवांस बुकिंग 20 अक्टूबर को दशहरा से शुरू होगी। इस बीच मेकर्स ने बताया है कि यह फिल्म कितनी भाषाओं में रिलीज होगी।

कितनी भाषाओं में रिलीज होगी ‘रामायण’?

मीडिया रिपोर्टर्स के मुताबिक फिल्म को दुनिया भर के दर्शकों के लिए आसान बनाने के लिए, ‘रामायण’ को लगभग 40 भाषाओं में डब किया गया है। इस वजह से, दुनिया भर के दर्शक इस फिल्म को अपनी समझ में आने वाली भाषा में बिना सबटाइटल के पूरी तरह देख पाएंगे। फिल्म को जिन भाषाओं में डब किया गया है, उनकी पूरी लिस्ट जल्द ही जारी कर दी जाएगी।

‘रामायण’ को बड़ी रिलीज बनाना चाहते हैं



जेकर्स

फिल्म के निर्माता नमित मल्होत्रा और ‘रामायण’ की कोर टीम इसे किसी भी भारतीय फिल्म की अब तक की सबसे बड़ी रिलीज बनाना चाहते हैं। वे लंबे समय से इस पर काम कर रहे हैं। सिनेमार्कान 2026 और सैन डिएगो कॉमिक-कॉन में फिल्म का प्रमोशन उसी दिशा में एक कदम था। इंटरनेशनल डिस्ट्रीब्यूशन के लिए सोनी पिक्चर्स को साथ लाना भी इसी पहल का हिस्सा है।

‘रामायण’ के बारे में जानकारी

‘रामायण’ में रणबीर कपूर भगवान राम, साई पल्लवी सीता, यश रावण, सनी देओल हनुमान का निभा रहे हैं। इस फिल्म को नितेश तिवारी निर्देशित कर रहे हैं, जो दंगल (2016) के लिए जाने जाते हैं। ए आर रहमान और हंस जियर ने मिलकर इसका म्यूजिक बनाया है। यह पौराणिक कहानी दो पार्ट में दिखाई गई है। इसका पहला पार्ट 5 नवंबर, 2026 को दिवाली वाले हफ्ते में रिलीज होगा, जबकि दूसरा पार्ट दिवाली 2027 में थिएटर में आएगा।

बॉलीवुड पर फूटा प्रवीण तरडे का गुस्सा, बोले- जिन्हें वह अपना दोस्त कहते थे उन्हें आना चाहिए था

दिग्गज अभिनेता नाना पाटेकर का अंतिम संस्कार पुणे स्थित उनके फार्महाउस में राजकीय सम्मान के साथ किया गया। एक्टर का निधन 75 वर्ष की आयु में हुआ। उनके अंतिम यात्रा में बॉलीवुड के कम ही सितारों ने शिरकत की। इस पर मराठी अभिनेता-फिल्म निर्माता प्रवीण तरडे ने बॉलीवुड पर निशाना साधा है।

बॉलीवुड की गैर मौजूदगी पर क्या बोले प्रवीण?

दिवंगत अभिनेता नाना पाटेकर के अंतिम संस्कार के दौरान और उसके बाद भी कई बॉलीवुड सेलेब्स शोक जताने उनके घर नहीं पहुंचे। इस पर मराठी अभिनेता-फिल्म निर्माता प्रवीण तरडे ने एक इंटरव्यू में कहा, ‘बॉलीवुड के लोगों का अंतिम संस्कार में शामिल न होना



नाना की महानता को कम नहीं करता। बॉलीवुड नाना से बड़ा नहीं है। नाना एक बहुत महान व्यक्ति थे। कुछ हजार किसान नाना की अंतिम यात्रा में शामिल हुए। उनके शरीर से पसीने और मिट्टी की गंध आ रही थी। वो सारे किसान, बॉलीवुड के इत्र लगाने वाले किसी भी व्यक्ति से कहीं अधिक महत्वपूर्ण हैं।’

किसान, सेलेब्स से ज्यादा जरूरी

आगे अपनी बातचीत में उन्होंने कहा, ‘मेरी



मौत का कारण दिल की धमनी में खून का थक्का जमना बताया गया। एक्टर के अंतिम संस्कार में बॉलीवुड से सिर्फ जैकी श्रॉफ, अनीस बज्मी, मेहुल कुमार, अनिल शर्मा और साजिद नाडियादवाला शामिल हुए थे। वहीं मराठी इंडस्ट्री से अभिनेता मकरंद अनासपुरे, प्रसाद ओक, गायक राहुल देशपांडे और सुरेश वाडकर भी उन्हें अंतिम श्रद्धांजलि देने पहुंचे थे।

सूर्या मूवी में आक्रामक दिखेगे सनी देओल साथ में नजर आयेंगी प्रज्ञा जायसवाल



बॉलीवुड स्टार सनी देओल अपनी अपकमिंग फिल्म ‘सूर्या: अंत से आरंभ तक’ में एक नए अवतार से दर्शकों को चौंकाने के लिए तैयार हैं। अभिनेता ने आज फिल्म का मोशन पोस्टर जारी करके इसकी आधिकारिक घोषणा की। फर्स्ट लुक पोस्टर में वह काफी गंभीर और आक्रामक अंदाज में नजर आ रहे हैं। इसके अलावा, सनी देओल ने यह भी बताया कि यह फिल्म कब रिलीज होगी।

मोशन पोस्टर में देखा जा सकता है कि सनी देओल उम्रदाराज लग रहे हैं। उनकी दाढ़ी आधी पकी है और आधी काली है। वह सिगरेट पी रहे हैं और उनका लुक आक्रामक है। उन्होंने टी-शर्ट पहनी है। पोस्टर शेयर करते हुए अभिनेता ने कैप्शन में लिखा ‘अतीत और वर्तमान के बीच उलझ हुआ, वह सच का पता लगाता है! पेश है ‘सूर्या: अंत से आरंभ तक’! 20 नवंबर 2026 को सिनेमाघरों में।’

‘सूर्या’ के बारे में जानकारी

‘सूर्या: अंत से आरंभ तक’ फिल्म का

निर्देशन मलयालम फिल्ममेकर एम. पचकुमार ने किया है।

यह उनकी बॉलीवुड में पहली फिल्म है।

यह फिल्म 2018 में आई मशहूर मलयालम थ्रिलर ‘जोसेफ’ का हिंदी रीमेक है, जिसे शाही कबीर ने लिखा था। खबरों के मुताबिक, देओल इसमें एक रियायर्ड पुलिस ऑफिसर का रोल निभा रहे हैं जो एक ऐसी जांच में फंस जाते हैं, जिसके कारण उन्हें अपराध और अपने अतीत के राजों का सामना करना पड़ता है। फिल्म में न्याय, नैतिक दुविधा और अनसुलझे सच के नतीजों जैसे विषयों को दिखाया गया है।

फिल्म की स्टार कास्ट में रवि किशन, प्रज्ञा जायसवाल, जिस्सू सेनगुप्ता, टीनू आनंद, मनीष बाधवा और तनुश्री चक्रवर्ती के साथ-साथ रोहित तिवारी और अनूप त्रिवेदी भी शामिल हैं।

इसे कमल मुकुट पेश कर रहे हैं। इस फिल्म को दीपक मुकुट, हेमंत मुकुट और लोकेश मुकुट ने एमएम मूवीज के बैनर के तहत प्रोड्यूस किया है।